アマン（インド）

2025 年「伊勢」と日本スタディプログラム　最終レポート

伊勢学習プログラムに参加する特権を得ることができました。このプログラムは、外国人に伊勢市や神道の伝統を紹介することを目的としたものです。プログラムには、さまざまな国から集まった 12 人の学生が参加し、多様で協力的な学習環境が提供されました。この 3 週間のプログラムは、皇學館大学によって主催され、講義、現地視察、文化交流を包括的に組み合わせた内容でした。

プログラム中、私たちは神道の歴史、伝統、実践について深く学びました。講義では神道の信仰や日本文化への影響について基礎知識を得ることができました。これらの授業内容は、重要な場所への現地視察を通じて補完され、直接体験する機会が与えられました。訪れた主な場所には、倭姫宮、伊勢神宮内宮、そして伊勢神宮外宮が含まれます。これらの訪問を通じて、建築様式、儀式、そしてこれらの神聖な場所の象徴的な意義について貴重な洞察を得ることができました。

2 週目は完全に現地視察に費やされ、伊勢の自然と精神的遺産を没入的に体験する機会となりました。朝熊山、夫婦岩、賓日館など、神道と自然との結びつきを示す独特な場所を訪れました。特に印象深かったのは、ユネスコ世界遺産に登録されている熊野古道への 2 日間の遠足です。

熊野古道の旅の初日には、熊野古道センター、花の窟神社、速玉大社、新宮神社を訪れました。これらの場所では、神道における巡礼の持続的な重要性を示す歴史的および精神的な文脈を理解することができました。2 日目は、那智大社、那智の大滝神社（日本一の高さを誇る滝がある場所）、そして熊野本宮大社を訪問しました。これらの神社での参拝を通じて、神道の精神的本質をより身近に体験することができました。これは非常に深い洞察を得られる旅であり、日本の宗教的実践への理解をさらに深める機会となりました。

プログラムの最終週である 3 週目は、神道の伝統を実際に体験することに重点が置かれました。儀式や伝統工芸などの実践的な活動に参加し、神道に根付く価値観についてより深い理解を得ることができました。プログラムはグループプレゼンテーションで締めくくられ、私たちの経験を振り返り、他の参加者や教員と洞察を共有しました。

:

伊勢学習プログラムは非常に充実した経験でした。講義と現地視察を巧みに組み合わせたことで、神道や日本文化を包括的に理解することができました。多様な背景を持つ参加者と交流することで、独自の視点を共有し、互いに学び合うことができたのも大きな魅力でした。

このプログラムを通じて、日本やその人々、宗教的伝統に対する理解が深まりました。神道についての知識が深まっただけでなく、日本の精神性と自然との調和的な関係に対する感謝の念も育まれました。日本の文化や精神的遺産に興味がある方には、このプログラムを心からお勧めします。

Aman（India）

2025 “Ise” and Japan study program Final report

I had the privilege of participating in the Ise Study Program, an initiative designed to introduce foreigners to the city of Ise and the traditions of Shintoism. The program gathered students from various countries, fostering a diverse and collaborative learning environment. This three-week program, hosted by Kogakkan University, offered a comprehensive blend of classroom lectures, field trips, and cultural exchanges.

During the program, we delved deeply into Shintoism, exploring its history, traditions, and practices. Classroom sessions provided fundamental knowledge about Shintoism and its culture. These lessons were complemented by field trips to significant locations, allowing us to witness and experience. Key sites we visited included Yamato no Hime Shrine, Ise Jingu Naiku, and Ise Jingu Geku. These visits provided us with valuable insights into the architecture, rituals, and symbolic significance of these sacred places.

The second week was entirely dedicated to field trips, offering an immersive experience of Ise’s natural and spiritual heritage. We visited notable sites such as Asamayama, Meotoiwa, and Hinjitsukan, each showcasing unique aspects of Shintoism and its connection to nature. A highlight of the week was the two-day excursion to Kumano Kodō, a UNESCO World Heritage site renowned for its ancient pilgrimage routes.

On the first day of the Kumano Kodō trip, we explored the Kumano Kodō Center, Hana no Iwaya, Hayatama Shrine, and Shingu Shrine. These locations provided a historical and spiritual context, illustrating the enduring significance of pilgrimage in Shintoism. The second day took us to Nachi Taisha Shrine, Nachi no Otaki Shrine—home to the tallest waterfall in Japan—and Kumano Hongu Taisha Shrine. Participating in worship at these shrines allowed us to experience the spiritual essence of Shintoism more intimately. It was a profound and enlightening journey, deepening our appreciation of Japanese religious practices.

The third and final week of the program emphasized practical engagement with Shinto traditions. We participated in hands-on activities such as ritual ceremonies and traditional crafts, gaining a deeper understanding of the values embedded in Shintoism. The program concluded with a group presentation, where we reflected on our experiences and shared our insights with fellow participants and faculty members.

The Ise Study Program has been an incredibly enriching experience. The thoughtful combination of classroom learning and field trips offered a holistic approach to understanding Shintoism and Japanese culture. Engaging with fellow participants from diverse backgrounds added a unique dimension to the program, as we shared perspectives and learned from one another.

Through this program, my understanding of Japan, its people, and its religious traditions has profoundly evolved. The program not only deepened my knowledge of Shintoism but also fostered a greater appreciation for the harmonious relationship between Japanese spirituality and nature. I wholeheartedly recommend this program to anyone interested in exploring Japan’s cultural and spiritual heritage.

अंतिम रिपोर्ट (हिंदी)

मुझे Ise अध्ययन कार्यक्रम में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो विदेशियों को Ise शहर और शिंतो धर्म की परंपराओं से परिचित कराने के लिए बनाया गया है। यह कार्यक्रम विभिन्न देशों के छात्रों को एकत्रित करता है, जिससे एक विविध और सहयोगात्मक अध्ययन का वातावरण बनता है। तीन सप्ताह का यह कार्यक्रम, कोगक्कन विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित, कक्षा व्याख्यान, फील्ड ट्रिप और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक व्यापक मिश्रण प्रस्तुत करता है।

कार्यक्रम के दौरान, हमने शिंतो धर्म के इतिहास, परंपराओं और प्रथाओं में गहराई से अध्ययन किया। कक्षा सत्रों में शिंतो धर्म और इसकी संस्कृति के बारे में मौलिक ज्ञान प्रदान किया गया। इन पाठों को प्रमुख स्थलों की यात्रा से पूरित किया गया, जिससे हमें इन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखने और अनुभव करने का अवसर मिला। हमने जिन मुख्य स्थलों का दौरा किया, उनमें यामाटो नो हाइम मंदिर, इसे जिंगू नाइकु और इसे जिंगू गेकू शामिल थे। इन यात्राओं ने हमें इन पवित्र स्थलों की वास्तुकला, अनुष्ठानों और प्रतीकात्मक महत्व के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

दूसरा सप्ताह पूरी तरह से फील्ड ट्रिप को समर्पित था, जिसने इसे की प्राकृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को गहराई से अनुभव करने का अवसर दिया। हमने असामायामा, मियोतोइवा और हिनजित्सुकान जैसे प्रमुख स्थलों का दौरा किया, जो शिंतो धर्म और प्रकृति के बीच के अनूठे संबंध को प्रदर्शित करते हैं। सप्ताह का मुख्य आकर्षण दो दिवसीय कुमानो कोडो यात्रा थी, जो अपने प्राचीन तीर्थ मार्गों के लिए प्रसिद्ध एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।

कुमानो कोडो यात्रा के पहले दिन, हमने कुमानो कोडो केंद्र, हाना नो इवाया, हयातामा मंदिर और शिंगु मंदिर का अन्वेषण किया। इन स्थानों ने ऐतिहासिक और आध्यात्मिक संदर्भ प्रदान किया, तीर्थयात्रा के शिंतो धर्म में स्थायी महत्व को दर्शाते हुए। दूसरे दिन, हमने नाची ताइशा मंदिर, नाची नो ओताकी मंदिर—जो जापान के सबसे ऊंचे झरने का घर है—और कुमानो होंगू ताइशा मंदिर का दौरा किया। इन मंदिरों में पूजा में भाग लेने से हमें शिंतो धर्म के आध्यात्मिक सार को अधिक निकटता से अनुभव करने का अवसर मिला। यह एक गहरा और प्रबोधनपूर्ण यात्रा थी, जिसने जापानी धार्मिक प्रथाओं के प्रति हमारी प्रशंसा को और बढ़ा दिया।

कार्यक्रम के तीसरे और अंतिम सप्ताह ने शिंतो परंपराओं के साथ व्यावहारिक जुड़ाव पर जोर दिया। हमने अनुष्ठान समारोहों और पारंपरिक हस्तशिल्प जैसी गतिविधियों में भाग लिया, जिससे शिंतो धर्म में निहित मूल्यों को समझने की गहराई प्राप्त हुई। कार्यक्रम का समापन एक समूह प्रस्तुति के साथ हुआ, जहां हमने अपने अनुभवों पर विचार किया और साथी प्रतिभागियों और शिक्षकों के साथ अपनी अंतर्दृष्टि साझा की।

Ise अध्ययन कार्यक्रम मेरे लिए एक अत्यंत समृद्ध अनुभव रहा है। कक्षा अध्ययन और फील्ड ट्रिप का सुविचारित संयोजन शिंतो धर्म और जापानी संस्कृति को समझने का एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। विभिन्न पृष्ठभूमि के साथियों के साथ जुड़ना इस कार्यक्रम में एक अनूठा आयाम जोड़ता है, क्योंकि हमने एक-दूसरे के दृष्टिकोण साझा किए और उनसे सीखा। इस कार्यक्रम के माध्यम से, जापान, इसके लोगों और धार्मिक परंपराओं के प्रति मेरी समझ गहराई से विकसित हुई है। कार्यक्रम ने न केवल शिंतो धर्म के बारे में मेरी जानकारी को गहरा किया, बल्कि जापानी आध्यात्मिकता और प्रकृति के बीच के सामंजस्यपूर्ण संबंध की अधिक सराहना करने को भी प्रेरित किया। मैं इस कार्यक्रम की सिफारिश उन सभी को करता हूं, जो जापान की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का अन्वेषण करना चाहते हैं।